पुस्तक समीक्षा

इस स्थायी-स्तम्भ के अन्तर्गत हम धनात्मक विचारधारा की पुस्तककों की परिचयात्मक समीक्षा प्रकाशित करते हैं। सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता से सम्बन्धित नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा हेतु लेखक पुस्तक की एक प्रति निम्नलिखित पता पर प्रेषित कर सकते हैं- सम्पादक, धर्मायण, महावीर मन्दिर, पटना, पटना रेलवे जंक्शन के निकट, पटना 800001. (समीक्षा हेतु डिजिटल प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।)

1. दुई पाटन के बीच, लेखक- दिनेश कुमार मिश्र, संस्करण- नवम्बर, 2006, प्रकाशक- लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून, उत्तराखण्ड, मूल्य- 200 रुपये-, पृष्ठ संख्या 190.

2. वागमती की सद्गति, लेखक- लेखक- दिनेश कुमार मिश्र, संस्करण- अक्टूबर, 2010, प्रकाशक- लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून, उत्तराखण्ड, मूल्य 250 रुपये, कुल पृष्ठ संख्या– 188.

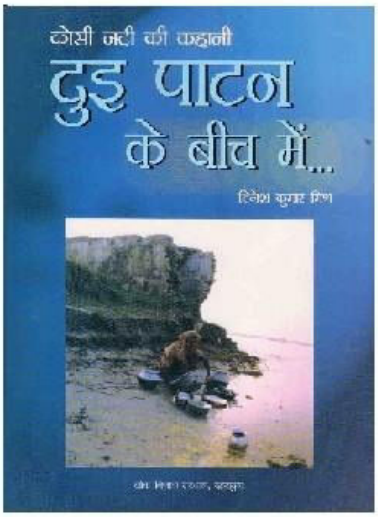

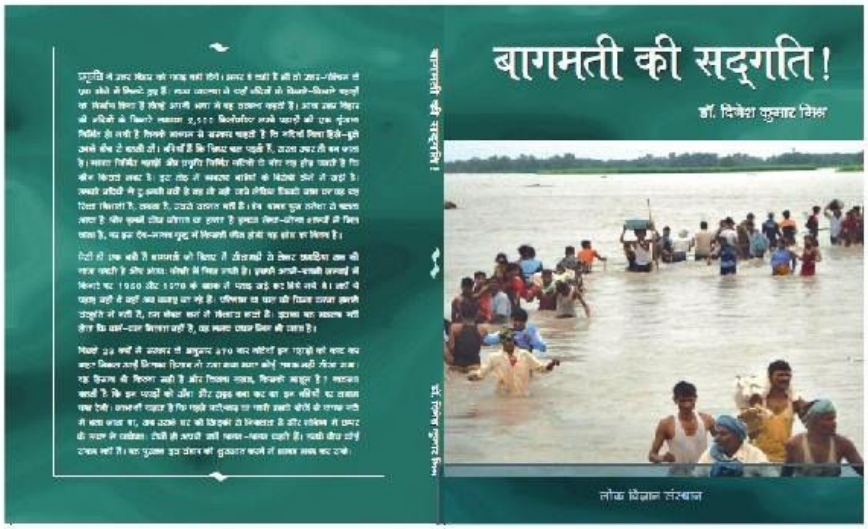

नदियाँ माँ होतीं हैं, जो अपने जल से सींचकर हमारे लिए अन्न और जल देतीं हैं, जिनसे हम जीते हैं। अतः नदियों के सम्बन्ध में अनेक लोक-गाथाएँ और मान्यताएँ फलीं-फूलीं हैं। डा. दिनेश कुमार मिश्र प्रसिद्ध जल-विज्ञानी रहे हैं। वे अध्ययन से एक इंजीनियर हैं, लेकिन नदियों के प्रति उनकी दृष्टि व्यापक है। वे नदियों को संस्कृति की संवाहिका के रूप में भी देखते हैं, नदियों को माँ के रूप में देखते हैं। यहीं पर उनकी दृष्टि सांस्कृतिक भी हो जाती है। उनकी सामान्य अवधारणा है कि नदियाँ माँ हैं और माँ कभी भी अनिष्टकारिणी नहीं हो सकती। लेकिन जब हम स्वार्थ के लिए नदियों के साथ छेड़छाड़ शुरू कर देते हैं तो उनका भयंकर रूप सामने आता है। इंजीनियरिंग, लोक-संस्कृति, धर्म इन सभी पहलुओं को समेटती हुई ये पुस्तकें हमें आह्लादित कर देतीं हैं और नदियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण बिल्कुल भारतीय हो जाता है- यही इन पुस्तकों की विशेषता है।

जुलाई का महीना बीत रहा है और यह मौसम बिहार के लिए बाढ़ के आने या ना आने के कयास लगाने का मौसम होता है। क्या हुआ है ये समझ में ही ना आये ऐसी वाली स्थिति देखनी हो तो बिहार के बाढ़ पर एक नजर

जरूर डालनी चाहिए। बाढ़ को सिर्फ एक प्राकृतिक आपदा मानने वाली आबादी को पहले ही बता दें कि बाढ़ सिर्फ प्राकृतिक आपदा नहीं होती। ये सरकारी कागजों के हिसाब से "आपदा" है, जिसपर बिहार के निवासी "मुस्की देकर" (भेद भरी मुस्कान) छोड़ देंगे। बाढ़ का अपना राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और हाँ पर्यावरण वाला पहलु भी होता है। सिर्फ पर्यावरण वाला पहलु बताते समय बाकी मुद्दे जान बूझ कर छुपा लिए जाते हैं।

बाढ़ राहत सिर्फ राजनैतिक ही नहीं आर्थिक और सामाजिक मुद्दा भी होता है। बाढ़ राहत के पैसे कई राजनैतिक दलों के लिए बहुत जरूरी हैं। अगर बाढ़ का पानी और उसके साथ बहकर राहत का पैसा बिहार ना आये तो कई राजनैतिक लालटेनों में तेल भी नहीं भरेगा। सिर्फ बाढ़ राहत के लिए ही नहीं, बिहार के कई सरकारी विभाग बाढ़ से बचाव और उसके निरोध के लिए भी चलते हैं। तटबन्धों को बनाने और उनके राख-रखाव का भी पैसा आता है। यहाँ एक मजेदार चीज़ ये भी है कि सरकार का कहना है कि कई तटबन्ध तो जमींदारों के बनवाये हुए हैं। उनकी सारी सम्पदा और अधिकार हड़प चुके लोकतन्त्र का मानना है कि जमींदारों को बनाये तटबन्धों और उनकी मरम्मत आदि की जिम्मेदारी लोकतन्त्र की नहीं है। इसलिए जब बाढ़ में टूटे तटबन्धों की गिनती भी बताई जाती है तो उसमें जमींदारी के तटबन्ध नहीं जोड़े जाते। वो हिन्दू होटल हैं जो राम भरोसे चल रहे हैं।

पिछले सत्तर साल में बाढ़ से करीब करीब हर साल हजारों मौतें हुई हैं। लोग लाखों की संख्या में विस्थापित होते हैं। कच्चे मकान का पांच हज़ार जैस मुआवजा देने में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। जितने की कृषि प्रभावित होती है, वो अक्सर बाढ़ राहत के बजट से दोगुने जैसी होती है। इन सब के बाद भी इनका स्थायी हल ढूँढने का प्रयास नहीं होता। अगर सिर्फ बाढ़ का डॉक्यूमेंटेशन कर दिया जाए तो सर धुनने लायक कई सरकारी मूर्खताएँ जग जाहिर हो जायेंगी। कैसे एक प्राकृतिक आपदा का भय बनाए रखकर नेताजी ने अपनी कई कई पुश्तों का इंतजाम किया है ये लिख देने पर दिखने लगेगा। लिखित शिकायतों और सवालों से इस वजह से भी परहेज किया जाता है। आर.टी.आई. के दायरे से बचने के लिए बोर्ड गठित करना और निजी कंपनियों को काम देने की भी ये एक मुख्य वजह होती है।

काफी शर्म के साथ बताना पड़ता है कि बिहार के इस मुद्दे पर किताब लिखने, उसका इतिहास बताने, भौगोलिक, आर्थिक महत्व समझाने का काम करने भी बिहारी लोग आगे नहीं आये। "दुई पाटन के बीच" जो कि कोशी पर है उसे डॉ. दिनेश मिश्रा ने लिखा है। डॉ. मिश्रा फ़िलहाल बाढ़ पर बात करने के लिए सबसे अनुभवी (और गैर-राजनैतिक) व्यक्ति होते हैं। आपने टी.वी. पर बाढ़ की चर्चाओं में उन्हें देखा होगा। कहीं से बाढ़ पर पढ़ने की कोशिश करेंगे तो लिखने वाले एक दो बार उनका और उनकी किताबों का जिक्र करते ही हैं। उन्होंने पचास से ऊपर पेपर और कुछ किताबें इसी विषय पर लिखी हैं। बाढ़ की भयावहता, उसके आर्थिक फायदे-नुकसान, और उससे जुड़ी मूर्खताओं के बारे में पढ़ना हो उनकी किताबें ढूँढ कर पढ़ लीजिये। ये ऐसे मुद्दों में से है जो कई राज्यों के लोगों को सीधे या परोक्ष तौर पर प्रभावित करता है। इसलिए ये किताबें बिहार के लिए ही नहीं, कई राज्यों के लोगों के लिए जरूरी हो जाती हैं। अपने अपने हितों को ध्यान में रखने के कारण जिन किताबों को स्कूल-कॉलेज के सिलेबस में होना चाहिए था, उन्हें प्रयाप्त प्रचार भी नहीं मिला है। अपने काम की चीज़ें आपको खुद ही ढूँढ कर पढ़नी होंगी। ढूँढिए पढ़िए, क्योंकि पढ़ना जरूरी होता है।

समीक्षक- श्री आनन्द कुमार